P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनजाति महिलाओं की दास्तान–अल्मा कबूतरी

शम्भुलाल मीना
सहआचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थान

सारांश

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास ''अल्मा कबूतरी'' में बुन्देलखंड क्षेत्र की जनजाति महिलाओं की दास्तानों को उजागर किया गया हैं। इस उपन्यास में कबूतरा जाति की आपराधिक प्रवृत्ति के कारण महिलाओं को होने वाली परेशानियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। कबूतरा जाति के लोग चोरी के अपराध में घर से बाहर रहते हैं। पुलिस उनकी तलाश करती है और महिलाओं को घरों में नाजायज परेशान करती है। महिलायें काफी समय अकेले रहने के कारण दूसरे पुरूषों से संबंध बना लेती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास के माध्यम से कदम बाई, भूरी, अल्मा की पीड़ा को उजागर किया है। लेखिका का मानना है कि बिना राजनीतिक भागीदारी के इस वर्ग की महिलाओं की पीड़ा कम नहीं हो सकती है। अल्मा कबूतरी की कदम बाई मंसाराम से उत्पन्न पुत्र राणा की जिम्मेदारी खुद उठाती है। भूरी अपने बेटे रामसिंह की पढ़ाई लिखाई के लिये वेश्या कर्म को भी बुरा नहीं मानती है। अल्मा को लेखिका ने सत्तारूढ़ पार्टी के राज्य मंत्री श्रीराम शास्त्री से जोड़कर उनकी मृत्यु होने पर उनकी राजनीतिक वारिश बनाकर 'प्रत्याशी' के रूप में चित्रित किया है। यह घटना नाटकीयता से युक्त है लेकिन महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिये संकेत है।

मुख्य शब्द : अल्मा– आत्मा, कबूतरी– जनजाति (बुन्देलखंड)

प्रस्तावना

मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी की आधुनिक नारीवादी लेखिकाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अलीगढ़ के ग्रामीण परिवेश में पली बढ़ी लेखिका ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश की महिलाओं की पीड़ा व्यक्त करते हुए महिला सशक्तिकरण हेतु ऐसे पात्रों की सृष्टि की है जो महिलाओं के लिए प्रेरणा बन सके। 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास के माध्यम से उन्होंने समाज की मुख्य धारा से अलग कबूतरा जाति की महिलाओं की पीड़ा को व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस जाति के लोग चोरी करने का कार्य करते हैं और महिलाओं को उनके कारण पुलिस के अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। कई दिनों तक घर पर नहीं आने के कारण महिलाओं को दूसरे पुरूषों से संबंध बनाने को मजबूर होना पड़ता है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास काफी रोचक है। पाठक एक बार उपन्यास पढ़ना शुरू करता है तो अंत तक उससे जुड़ा रहता है। उसके पात्र पाठक से बाते करने लगते हैं और वह चिंतन की दिशा में आगे बढ़ता है। लेखिका ने 'अल्मा कबूतरी' शब्द पर चिंतन–मनन कर इस उपन्यास का नामकरण 'अल्मा कबूतरी' किया है। कबूतरा जाति को अपराधी कार्यों में लिप्त करने हेतु समाज जिम्मेदार है। उपन्यास का पात्र रायसिंह देश के प्रधानमंत्री (पंडित जवाहर लाल नेहरू) के भाषण को रेखांकित करता है मुझे अपराधी जनजाति के अधिनियम की भयानक वास्तविकता मालूम है। यह इंसान की आजादी को नकारती है। इसे कानून–संहिता से हटाने की कोशिश की जानी चाहिए। किसी भी जाति को अपराधी श्रेणी में नहीं डाला जा सकता । यह बँटवारा अपराधियों के प्रति न्याय और प्रगति के सिद्धान्तों का उल्लंघन करता है।[1]

आजादी के पश्चात् भी कुछ जनजातियों की स्थिति में सुधार नहीं आया और उनकी हालत दयनीय है। कबूतरी का रायसिंह कहता है कि आजादी के बाद का सड़ा हुआ दुर्गंध मारता इतिहास ———कॉपी के पन्ने चिंदी–चिंदी कर डाले। झूठा मुँह–झूठी इबारत। बोलने के लिए बोले गए चमत्कारी जुमले, ढोंग, गंदा खेल ।[2]

उच्चवर्ग के लोग आज भी नहीं चाहते है कि ये लोग अपने परम्परागत कार्यों को छोड़े। पुलिस भी अपराधियों से कमाई करती है। दीवान का भय कहता है –ये साले तो अपना रोजगार बदल रहे हैं। एक दिन ऐसा आयेगा कि

पुलिस महीना–हफ्ता तो क्या पगार तक को तरस जाएगी। आरक्षण के जरिए बढ़े आ रहे हैं अभी तो, फिर खुद ब खुद जागरूक हो जाएंगें।'' [3]

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बुन्देलखंड की कबूतरा जनजाति के आपराधिक कार्यों में लिप्त रहने और महिलाओं को मजबूरी में पराये पुरूषों से संबंध बनाने की स्थिति का चित्रण किया है। कबूतरा जाति को अपराधी कार्यों में लिप्त करने हेतु समाज जिम्मेदार है। आज का युग महिला सशक्तिकरण का है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में नारी स्वातंत्र्य और पुरूष के समकक्ष स्थान दिलाने की भरपूर कोशिश की है।

यदुवंशी कृष्ण ने भी पुश्तैनी कार्य को महत्त्वपूर्ण बताया। अल्मा कबूतरी का एक पात्र कहता है –साला यह जनेऊ जब तक नहीं पहना था तो लगता था, वे कुछ हैं जो कर रहे हैं उनके काबू में है। अब तो लगता है कि उनके संग–संग जनेऊ रहता है। हटकता बरजता है बस, जनेऊ के धागों का वजन असहनीय हो जाता है । पर क्या किया जाए, जनेऊ का जो महत्त्व बताया गया है, उसे तोड़कर फेंकने से भी डर लगता है। उस महत्त्व का तिरस्कार अपना ही तिरस्कार है।' [4]

कथाकार मैत्रेयी पुष्पा की यह शक्ति और दृष्टि की ईमानदारी है कि वह विचार की इस शक्ति को रेखांकित करती है। एक तरफ यह विचार मंथन रायसिंह कबूतरा को बेचैन करता है तो दूसरी तरफ मंसाराम यादव को उद्विग्न करता है। आधुनिक भारत के जिस स्वप्न को स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं ने देखा था, वह ऐसी ईमानदारी के हाथों ही जन्म लेगा। इस प्रसव के लिए यही भावना और प्रतिबद्धता चाहिए। मस्तराम कपूर लिखते हैं–जब तक आधुनिक राज्य की विभिन्न संस्थाओं पर कुछ द्विज जातियों का वर्चस्व बना हुआ है, तब तक आधुनिक राज्य एक ढकोसला है।'[5]

शिक्षा, पुलिस, प्रशासन, न्यायपालिका और संसद ऐसे ही सांस्थानिक क्षेत्र हैं। कथाकार मैत्रेयी पुष्पा इतिहास में राजपूत जातियों के जौहर की कथा को भी संदेह की दृष्टि से देखती है। उन्होनें इस महिमा मंडन में जिजीविषा की हत्या और जिन्दगी के अंत के षड़यंत्र को भांप लिया था। उन्होंने अल्मा कबूतरी में लिखा है –कि पद्मिनी अपनी बाँदी सखियों और रानी रक्कासाओं को लेकर सैनिकों के साथ भाग छूटी थी । आन–बान कहाँ रह गई, जिंदगी में सब छीन लिया। प्राण ही सबसे ज्यादा प्यारे लगे ।' [6]

आत्मघात जो पुरूषों के लिए पाप है, वह जौहर के रूप में, सती के रूप में, स्त्रियों के लिए कैसे महापुण्य हो जायेगा ? औरत अब जाग गई है कि –मर्द औरत के लिए नहीं, अपने लिए लड़ते हैं।[7] मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार राजपूत रानिया अपने जीव को बचाने के लिए सैनिकों, बंदियों, रक्कासाओं से संबंध बनाये और नदी–घाटियों, पहाड़–पर्वतों पर बालक जन्मे। रानी पद्मिनी की संतान , वीरों के अंश – जंगलों में विचरने वाली चित्तौड़ से भागी हुई पीढ़ियाँ – रसद लेने ले जाने वाले कहाए बंजारा। नाचते–गाने वाले हुए– कबूतरा।[8]

मैत्रेयी पुष्पा ने अल्मा कबूतरी में कबूतरा जाति की महिलाओं के स्वतंत्र यौनाचार और अदम्य जिजीविषा को चित्रित किया है। कदमबाई का मंसाराम के साथ संबंध था। उसने राणा को अपनी हिम्मत से पाला और मंसाराम की मदद नहीं ली। अल्मा भी कदमबाई की बहू थी। अल्मा का शाब्दिक अर्थ आत्मा होता है जो सदा अजर–अमर होती है। अल्मा कबूतरी एक स्त्री की काव्य कथा है, जो स्त्री होने के दुःख तो उठाती है, परन्तु उस पीड़ा और यातना में भारी इजाफा इस आधार पर भी हो जाता है कि उसकी सामुदायिक पहचान एक अपराधी कही जाने वाली जाति की है। यह जनजाति सभ्य समाज द्वारा बहिष्कृत और लांछित भी है। उनका मानना है कि यह गाँव में रहेंगे तो चोरी करेंगे। इन मनुष्यों की यथार्थ पीड़ा के बारे में सभ्य समाज ने कभी सहानुभूतिपूर्वक विचार नहीं किया कि ये भी राष्ट्र के विकास में योगदान कर सकते हैं।

वीरसिंह कबूतरा की हत्या, उसके बेटे रामसिंह को दलाल बनाना और उसकी बेटी अल्मा कबूतरी को सुशिक्षित और सुलक्षणा होने के बावजूद सिर्फ जातीय पहचान के कारण बार–बार बलात्कार का सामना करना पड़ता है।

साहित्य मन के रेचन का एक उपकरण भी है । मैत्रेयी पुष्पा एक सजग कथाकार हैं, वर्तमान की बीहड़ता को समझती हैं, इसलिए भविष्य की रूपरेखा निकाल पाती हैं। वह जानती है कि यह राजे–रजवाड़ों का वक्त नहीं है, इसलिए यहाँ तीर–तलवार तमंचो से बदलाव नहीं होगा। यह लोकतंत्र है जहाँ प्रजा राजा चुनती है। राजनीति ही वह हथियार है जिसके द्वारा बदलाव लाया जा सकता है। अल्मा कबूतरी को भी लेखिका उसी मोड़ पर खड़ा करती है। रोहिणी अग्रवाल लिखती है–विडंबना यह है कि आज पूँजी की बढ़ती ताकत के समानांतर राजनीति ने न केवल अपनी स्वतंत्र सत्ता को कायम रखा है, बल्कि पूँजी के क्षेत्र में घुसपैठकर उसे बाजार का रूप देते हुए अपनी ताकत को बढ़ाया भी है, यानी राजनीति से अप्रभावित रहकर किसी सामाजिक परिवर्तन या निर्माण की बात नहीं की जा सकती। चाक में बिखरे संकेतों को उठाने हुए एक बार फिर मैत्रेयी पुष्पा राजनीति में नई पीढ़ी की शिरकत की कामना करती हैं। [9]

अल्मा कबूतरी परम्परा की मजबूत कड़ी है। वह अपना रास्ता खुद जानती है– एक क्षण ऐसा आया है जब लगा कि आस–पास न राणा है न श्रीराम शास्त्री । अल्मा रथ में बैठी इच्छा मार्ग पर जा रही है ––– धीरज को अपने मंतव्य बताती हुई। काँपता हुआ कलेजा अब शांत है। वह गर्वित–सी भोर थी।'[10]

मैत्रेयी पुष्पा,अल्मा कबूतरी की कथा को नारी की त्रासदी के रूप में प्रस्तुत करती है। सदियों से अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत बुंदेलखंड की कबूतरा जनजाति कथा वस्तु की आधार भूमि की तरह प्रतिष्ठित होकर भी वर्तमान की सम्पूर्ण सामाजिकता को आवृत्त कर आजाद भारत के पचास वर्षों की कटु प्रासांगिकता को रेखांकित करती है।

स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र के लिए वोट सत्ता प्राप्ति के लिए आवश्यक औजार है। सत्ता प्राप्ति के बाद

पिछड़े वर्ग के लिए योजना बनाई जाती है और उसका फायदा उच्च वर्ग के लोग उठाते हैं। उच्च वर्ग के लोग निम्नवर्ग की महिलाओं से वासना की पूर्ति कर भी उसे बराबरी का दर्जा नहीं देते हैं। अल्मा कबूतरी की कदम मंसाराम से शारीरिक संबंध बना कर राणा को जन्म देती है। राणा बड़ा होकर भी कबीले की रस्मो रिवाज के मुताबिक चोरी–राहजनी में नहीं खप पाता। सब उसकी जान के दुश्मन हो जाते हैं और अपने भी पराये हो जाते हैं। मंसाराम की पत्नी कल्याणी तो फाड़ खाने के लिए खूँखार कुत्ता छोड़ देती है। मंसाराम की इतनी औकात नहीं है कि उसे अपने बेटों की तरह अपना ले।

कदमबाई के स्त्री होने व संतान जनने को परिभाषित करती हुई लेखिका कहती है–'धरती सी हरी–भरी एक औरत थी, वह जिसका भी अंश साधना चाहती थी, साध लिया। समय बताएगा कि यह बच्चा न कज्जा (ऊँची जाति) है, न कबूतरा। आदमी है बस'।कदम बाई अपने परिवेशन के यथार्थ से भी परिचित है। वह जानती है कि मंसाराम का समाज उसे और उसकी अवैध औलाद को कभी स्वीकार नहीं करेगा। वह अपने बेटे राणा को बार–बार याद दिलाती है कि उसे अपनी हदों को लाँघना नहीं है । उसे कबूतरा बन कर अपराधों से अपनी जिंदगी बाँधे रखना है। कदमबाई कहती है, ये जुग–जुग के दगाबाज .....राणा, तू इनकी संगत करके अपने धंधे की ईमानदारी से भी जाएगा। तू यह न समझना कि हम इनमें मिलकर कज्जा हो जाएगे। हम तो उनकी बोली–बानी बोलते हुए भी इनसे अलग हैं। इनकी रोटी और हमारी टुक्क अलग नहीं, पर भूख–प्यास की कीमत अलग है...इन पंक्तियों में कबूतरी ने मंसाराम की दुनिया के वर्ग–चरित्र को उघाड़कर रख दिया। कज्जा (उच्च वर्ग) वर्ग के लोग भी पूरे बाजीगर होते हैं एक भूखों मारेगा तो दूसरा लालच देगा। यह संरक्षण और शोषण की संस्कृति है। इसमें आश्रय एवं उत्पीड़न साथ–साथ चलते हैं। कज्जा लोग यह सहन नहीं करेंगे कि कबूतरा शिक्षित हो, वे बैद–डाकघर के पास जाए। नौकरी करें, सफेद कपड़ा पहने, घड़ी बाँधे। सवर्ण समाज सेउपजी पुलिस को भी यह सब बर्दाश्त नहीं है। ग्रामीण भारत में दलितों के रूप में अनगिनत कदमबाई, राणा, अल्मा, मलिया, रामसिंह, भूरी बाई जैसे पात्र उपेक्षा के शिकार होते हैं। मैत्रेयी के तमाम नारी–पात्र अपनी ताकत के लिए ही विशिष्ट है। वे बदलाव का माध्यम बनने की कोशिश करते हैं।

कदम बाई हिम्मतपूर्वक अपने पुत्र राणा की ई जिंदगी गढ़ने के लिए अपराध के दलदल से निकालकर छुरी–कटार की जगह कलम–किताब पकड़ाती है और उज्जवल भविष्य के लिए रामसिंह (अध्यापक) के पास गोरामछिया भेजती है।

लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अल्मा कबूतरी उपन्यास में भूरी, कदम, अल्मा को दलित नहीं महाकाल से टकराने में सक्षम तेजपुंज बताया है। ये महिलाये चुनौतियों से टकराती ही नहीं, खुद भी चुनौती बनती है। उनके लिए देवताओं और शैतानों की दुनिया में कोई फर्क नहीं । भूरी अपने बेटे रामसिंह को गोद में लिए अपने पति की लाश के आगे कौल भरती है –पतिव्रता लुगाई अपने आदमी के संग सती होती है। मैं अपने मर्द की ब्याहता खुद को तब मानूँगी, जब रामसिंह को पढ़ा–लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे पर खड़ा कर दूँगी। भले इस सफर में मुझे दस मर्दो के नीचे से गुजरना पड़े। जिस दिन रामसिंह ने बाप का लाल खून नीली स्याही अपने हक में चार आँक लिख दिए, समझूँगी मुझमें राई–भर कलंक नहीं। विद्यारतन के आगे देह का खजाना कुछ भी नहीं।' 11

आखिरकार भूरी अपने बेटे को अपराधी जिन्दगी से अलग रखकर पढ़ा–लिखाकर मास्टर (अध्यापक) बना देती है।

राजनेता भूरी, कदम, अल्मा जैसी नारियों का शोषण करके अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। अल्मा अपने प्रेमी राणा और मददगार धीरज की दुदर्शा से परेशान रहती है। वह दुर्जन, सूरजभान, श्रीराम शास्त्री के शोषण का शिकार हुई। राजनीति में बैर और प्रीत एक ही थैले में रखे जाते हैं। वह समझ गई कि भागा नहीं जा सकता । भागकर जहाँ भी जाएगी, कोई दूसरा हाथ उसे नंगा करने के लिए आगे आ जाएगा। रास्ता यहीं से निकालना होगा। वह रास्ता निकल कर अल्मा कबूतरी से श्रीमती अल्मा शास्त्री बनकर प्रतिष्ठित हुई।

अल्मा उसी सत्ता के खेल का मोहरा बन गई, जिसके बारे में डाकू से मंत्री बने श्रीराम शास्त्री की राय है – चोरों के सरताज होकर डाकुओं से नफरत करते हो। उसके लिए मंत्री होना पद्वी नहीं, सजा है।

राजनीति में आज जिसकी जयकार बोलते हैं, कल उसी को बुरा दिखाने में कोई गुरेज नहीं। अब राजनीति समर्पण नहीं प्रोफेशन है। सब धन्धों के अनुयायी है। अल्मा मन से तो राणा के अलावा किसी के बारे में सोच नहीं सकती थी, किन्तु श्रीराम शास्त्री उसका मोहरा है और श्रीराम शास्त्री की हत्या के बाद उसे विधान सभा का टिकिट मिलता है। मैत्रेयी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बुन्देलखंड की जन जीवन और आजादी के पश्चात् की राजनीतिक इच्छाशक्ति और सामाजिक नैतिकता के पराभव का अंकन किया है। अल्मा कबूतरी में स्वातंत्रोत्तर भारत में निरंतर राजनीतिक नैतिकता के क्षरण के साथ धर्म के लौकिक उपयोग के आगे उपभोग का छल प्रपंच और सांस्कृतिक बेहयाई का रेशा–रेशा भास्वर है। स्त्री–पुरूष एक दूसरे के पूरक है। अल्मा कबूतरी की औरत वीरसिंह की प्रेरक शक्ति है, मंसाराम की जिन्दगी की सार्थकता है, धीरज और राणा को संघर्ष पथ की दुश्वारियाँ समझाने का साहचर्य है। लोक की रीति से टकराकर लोक के लिए नई रीति गढ़ने का संबल है।

उपन्यास का अंत प्रस्थान बिंदु है– एक नई शुरूआत। अल्मा राजनीति में सक्रिय होने का संकेत है–'सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से यह संभावना की जा रही है कि श्रीराम शास्त्री के निधन के कारण बबीना विधानसभा की जो सीट खाली हुई, उसके लिए प्रत्याशी श्रीमती अल्मा शास्त्री होंगी।'

मैत्रेयी के उपन्यास आधुनिकता की कसौटी पर ढीले–ढाले और प्रेमचन्द की पीढ़ी के अधिक नजदीक माने जाते हैं। निसंदेह अल्मा कबूतरी पिछले कुछ सालों के चर्चित उपन्यासों से बहुत कुछ अलग–थलग है। यह

उपन्यास बुन्देलखण्डी संस्कृति से ओत–प्रोत जनजाति विशेष के लोकाचारों को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत करता है।

रामशरण जोशी के मतानुसार अल्मा कबूतरी उपन्यास का अंत बहुत चालू किस्म का हो गया है। 'फिल्मी तर्ज में कहूँ तो इसका दि एंड बिलकुल वॉलीवुड फिल्म जैसा है, और वह भी दूसरे दर्जे की फिल्म।'[12] उपन्यास की नायिका अल्मा कबूतरी अचानक राजनीतिक नेता के रूप में उभरती दिखायी देती है। मीडिया का आकर्षण बन जाती है। वह अपने राजनीति गॉड फादर, राज्य मंत्री श्रीराम शास्त्री के अंतिम संस्कार के क्षणों में उभरती, राजनीतिक तारीका दिखाई देती है। वह जनता की सहानुभूति बटोरती है। उसे श्रीराम शास्त्री के उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाता है। सत्तारूढ़ पार्टी अल्मा को दिवंगत राज्यमंत्री की सीट पर अपने प्रत्याशी के रूप में देख रही है। यह दृश्य अति नाटकीयता से ग्रस्त दिखाई देता है। दस्यु सुन्दरी फूलन देवी का राज्य संस्करण अल्मा में जन्म लेता दिखाई देता है।

जोशी जी ने उपन्यास (अल्मा कबूतरी) के बारे में यहाँ तक लिखा है कि 'उपन्यास के आखिरी पैरा पर पहुँचते'–पहुँचते मैं खुद को असुरक्षित महसूस करने लगता हूँ। लेखिका मुझे छलावा देकर शिखर तक ले जाती है और फिर धड़ाम से किसी पोखर में धकेल देती है। वहाँ से जैसे–तैसे निकलता हूँ और सोचने लगता हूँ कि मैं फँसा ही क्यों छलावें में? क्योंकि कबूतरी कदमबाई, उसका लड़का राणा और उसकी प्रेमिका अल्मा कबूतरी के मोह जाल में उछलता हुआ शिखर तक पहुँचा? पर चालाक लेखिका ने शिखर पर सत्संग का अवसर दिए बगैर ही धक्का देकर गिरा दिया।'[13]

उपन्यास में सत्तर अस्सी फीसदी हिस्से तक उठने वाले मुद्दे और दृष्टि विलुप्त सी दिखाई देने लगती है। कुछ कर गुजरने वाली अल्मा सफेदश पोश माफिया राज्यमंत्री श्रीराम शास्त्री के चंगुल में फँस जाती है, उसकी राजदार बन जाती है। राज्यमंत्री विरोधी माफिया की गोलियों का शिकार हो जाता है और मुखाग्नि उनकी पत्नी अल्मा देती है। लेखिका ने अल्मा को माफिया नेता की वैध पत्नी और पार्टी की संभावित प्रत्याशी का दर्जा दिलाकर लेखिका थीम के मुखरित सरोकारों का भी पिण्डदान कर दिया है। उपन्यास का अंतिम चौथाई हिस्से से थीम डोलता नजर आ रहा है। लेखिका उसे पटरी पर लाने का प्रयास करती है किन्तु गंतव्य बिन्दु पर पहुँचाने की बजाय दूसरे ट्रेक पर डाल देती है। इससे लगता है कि उपन्यास का आरंभ जितना सशक्त, जानदार है, अंतिम भाग उतना ही लचर और चलताऊ है।

हिन्दी में आदिवासी समाज पर कुछ उपन्यास चर्चित भी हो चुके हैं। जैसे 'कब तक पुकाऊँ' – रांगेय राघव (बंजारा जनजाति पर) 'मादल का दर्द'– श्याम व्यास (आदिवासी समाज पर) किन्तु खानाबदोश अपराधी जनजातियों पर उपन्यास लिख कर मैत्रेयी पुष्पा ने बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। औपनिवेशिक भारत में इन अपराधी जाति, जनजातियों का खासा दबदबा रहा हैं, पिंडारी, कंजर, कबूतरा, साँसी, ठग, हाबुड़ा, नट, कलंदर, गडिया, लोहार, लम्बाड़ा इनमें प्रमुख हैं।

लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का मानना है कि राजनीतिक शक्ति अर्जित किए बगैर बदलाव का सपना अधूरा ही रहता है।

निष्कर्ष

'अल्मा कबूतरी' में अनपढ़ कदमबाई और भूरी बाई का ज्यादा प्रभाव है। अल्मा कबूतरी के चित्रण में लेखिका 'फास्ट ट्रेक' पर चलती दिखाई देती है। बेहतर होता कि अल्मा को आहिस्ता–आहिस्ता समझारी व परिपक्वता के साथ विकसित किया जाता, जिस तरीके से कदमबाई और भूरी बाई को किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मैत्रेयी : 'अल्मा कबूतरी' पृ. 104 (राजकमल प्रकाशन)*
2. *वही–पृ0 104*
3. *वही– पृ0 105*
4. *वही– पृ0 23*
5. *मस्तराम कपूरः जातिवाद जनगणना की जरूरत (जनसत्ता) पृ.6 (29 मई 2010)*
6. *मैत्रयी पुष्पा : अल्मा कबूतरी पृ0 129*
7. *वही– पृ0 115*
8. *वही – पृ0 129*
9. *मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य– सं0 दया दीक्षित पृ0 45(सामयिक प्रकाशन)*
10. *मैत्रेयी पुष्पा – अल्मा कबूतरी*
11. *वही– पृ0 130*
12. *अल्मा कबूतरी गुस्ताख सवालो का खतरनाक जोशी (स्त्री होने की कथा – सं0 विजय बहादुर सिंह पृ0–168)*
13. *वही– पृ0 168*